MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

December 2018
Issue-29, Vol-01

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

53	डॉ.देविदास क. बागणे	दुष्यन्तकुमार जी के गजलों में सामाजिक विमर्श	138
54	डॉ. राजेश भागरे	समकालीन हिन्दी गजलों में धार्मिक चेतना	141
55	प्रा. दादासाहेब खाडेकर	वर्तमान दशक की हिंदी गजल में आम आदमी	144
56	डॉ. एकनाथ श्रीपती पाटील	दुष्यंतकुमार के गजलों में सामाजिक विमर्श	146
57	ज्वाज्जल्या गंगुला	सामाजिक यथार्थ का मंजर अभिव्यक्त करती गजलें	149
58	प्रा. सौ मनिषा कल्याण तावरे	21 वी शादी की हिन्दी गजलों में : नारी विमर्श	151
59	प्रा. डॉ. मुकेश गायकवाड 'मुकेशराजे	21 वीं शादी की हिंदी गजलों में व्यक्त राजनीतिक विमर्श	153
60	डॉ प्रमोद एम चौधरी	21 वीं सदी का हिंदी ग़ज़ल साहित्य : विविध आयाम	156
61	प्रा.देशपांडे आर के. प्रा.म्हस्के एन.आर	समकालीन हिंदी गजल में नारी विमर्श	158
62	संगिता पंढरीनाथ मांडगे	समकालीन हिंदी गजल – स्त्री विमर्श।	160
63	राजाराम बाबुराव तायडे	चन्द्रसेन विराट की गजलों का अनुशीलन	162
64	प्रा.डॉ. बिक्कड ए.एसप्रा.डॉ. रमाकांत शारंगधर आपरे	'वर्तमान गजलों में राजनीतिक चेतना'	165
65	रेवनसिध्द काशिनाथ चव्हाण	समकालीन गजल : विविध विमर्श	167
66	डॉ. संजय म. महेर	दुष्यंत कुमार की गजलों में चित्रित सामाजिक विमर्श	169
67	सतीशकुमार पडोलकर	समकालीन हिंदी गजल : सांप्रदायिक सद्भाव	171
68	डॉ शीला भास्कर	देह का विमर्श बनाम स्त्री का बाजार	172
69	डॉ. शहनाज महेमुदशा सय्यद	हिंदी गज़ल में सामाजिकता	174
70	प्रा. दहातोंडे सोपान भानुदास	समकालीन हिंदी ग़ज़लःराजनीतिक विमर्श चुनाव के विशेष संदर्भ में	177
71	डॉ.श्वेता चौधारे,	21 वी सदी की हिंदी ग़ज़लों में ग्राम्य विमर्श	180
72	अंबेकर वसीम फातेमा अब्दुल अजीज	इक्कीसवीं सदी की हिंदी गजल में नारी–विमर्श	184
73	प्रा. टेकाळे रागिनी पुरूषोत्तम	समकालीन हिंदी गज़लः राजनीतिक विमर्श	187
74	प्रा.मनिषा रामचंद्र गाडीलकर	दुष्यंतकुमार की गजलों में अंकित सामाजिक संवेदना	189
75	प्रा.डॉ.सुनीता मोटे	इक संगीन लड़ाई है ग़ज़ल	191
76	डॉ. नवनाथ गेठेकर	दुष्यन्त कुमार : कालजयी सामाजिक गजलकार	194
77	डॉ..युवराज राजाराम गुळये	शमशेर की गज़लों में सामाजिकता	196
78	प्रा. डॉ. सुनीता कावळे	आधुनिक गजलकारों की गजलों में सामाजिक चेतना	198

दुश्यंतकुमार की गज़लों में अंकित सामाजिक संवेदना

प्रा.मनिषा रामचंद्र गाडीलकर

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य और हिंदी जगत में आज 'गज़ल' एक लोकप्रिय काव्य विधा के रूप में स्थापित है। हिन्दी में गज़ल लेखन की परंपरा का श्रेय कबीर, अमीर खुसरो, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, प्रसाद, निराला आदि को दिया जाता है। हिन्दी साहित्य में गज़ल की परंपरा अरबी–फारसी उर्दू से आई है। 'हिन्दी गज़ल' का लेखन उसी रुमानी सौंदर्य व प्रणय के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित करना था। दुष्यंतकुमारने आधुनिक कविता और उसके भीतर का आक्रोश जब अभिव्यक्त नही हो रहा था। तब उन्होंने नई काल शैली 'गज़ल' सही माध्यम समझकर इसे चुना, गज़ल में वही भाषा का इस्तेमाल हो जो जनता से जुड़ी हो और जनता उसे समझ सके।

दुष्यंतकुमार ने जब हिन्दी कविता से हिन्दी गज़ल लेखन में कदम रखा तब गज़ल और कविताओं का माहौल ठीक नहीं था। गज़लों में वही प्रेमिका–प्रेमी की बातों से गज़ल एक नया रास्ता ढूँढ रही थी, जो रास्ता खुद दुष्यंतकुमार निकले। दुष्यंतकुमार ने हिन्दी गज़ल की प्रकृति को बदला है। सच्चे अर्थों में उन्होंने साहित्यकार का दायित्व निभाया। इन्सानी जिंदगी की तकलीफों, यातनाओं को महसुस किया और चुप न रहकर उससे सत्ताधिशों की नींद हराम कर दी। दुष्यंतकुमार ने अपनी गज़लों में प्रेम संवेदना, सामाजिक संवेदना, राजनीतिक संवेदना, धार्मिक संवेदना, आर्थिक संवेदना आदि को अंकित करने का सफलतापूर्ण प्रयास किया है।

1 दुश्यंतकुमार की गज़लों में सामाजिक संवेदना :

1.1 सामाजिक अव्यवस्था :

भारतीय समाजव्यवस्था को शास्त्रों में 'वसुदेव कुटुम्बकम' की परिभाषा से स्वीकारा गया है, मगर भारत जैसे विशाल देश में सामाजिक व्यवस्था के नाम पर संघर्ष रहा है। व्यवस्था के नाम पर एक जाति का दूसरी जाति पर अधिपत्य के अलावा शोषण, गुलामी और समाजव्यवस्था के नाम पर समाज यातनाग्रस्त रहा है। सामाजिक व्यवस्था के नाम पर असमानता होने के साथ वर्गवाद, वर्णवाद, भाषावाद, जातिवाद, प्रांतवाद, भाई–भतिजवाद, उँच और नीच, अमीर'–गरीब आदि विभिन्न सामाजिक बुराईयों का यह समाज सत्ता, पैसा, अधिकार पर ही जब समय–समय पर लोगों पर रौब अपना अधिकार करता है। तब बुध्द, महावीर, कबीर, कार्ल–मार्क्स, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर म.गांधी, महात्मा फुले आदि ने समाज में व्याप्त अव्यवस्था मिटाने के लिए जीवन भर संघर्ष किया था।

दुष्यंतकुमार की गज़लों में जो बात उभरकर सामने आई है, वह व्यक्ति एवं सामाजिक चेतना की बाते है। साहित्य समाज का आईना है, मगर एक समय यह भी था, जब मनोरंजन, धर्मप्रचार, उपदेश ही साहित्य का या काव्य का लक्ष्य था। दुष्यंतकुमार सामाजिक अव्यवस्था पर प्रहार करते हुए 'साये में धुप' में लिखी गज़लों में चित्रित दृश्य शेर में प्रस्तुत है। सामाजिक विषमता उन्हें गहराई से दुःख और चोट पहुँचती है –

"कहाँ तो तय था चिरागा हरेक घर के लिए,/कहाँ चिराग, मयस्कर नही शहर के लिए।"[1]

दुष्यंतकुमार आमआदमी की पीडा के महाकवि है। दुष्यंतकुमार एक ऐसे कवि रहे हैं, जिन्होंने संत कबीर की भाँति अपने समय की समाजव्यवस्था से संतुष्ट नहीं थे।

1.2 परिवर्तनशीलता :

दुष्यंतकुमार समाज और देश की वर्तमान परिस्थिती से नाखुश है। लोकतंत्र और समाज में व्यक्तियों की स्थिती इतनी बुरी तरह बिगडी हुई है कि उसे सुधारना उसमें परिवर्तन लाना वे जरुरी समझते हैं। समाज का प्रत्येक व्यक्ति पीडा से पीडित है, वे अपनी गज़ल में कहते हैं –

"हो गई है पीर पर्वत–सी पिघलनी चाहिए,/इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
आज यह दिवार, परदों की तरह हिलने लगी,/शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।
सिर्फ हंगामा खडा करना मेरा मकसद नहीं,/मेरी कोशिश है कि ये सुरत बदलनी चाहिए।"[2]

1.3 बिगडे हुए हालात :

समाज की हालत को देखकर दुष्यंतजी चिंताग्रस्त है, समाज अपनी सही दिशा खो चुका है, ऐसे हालत चारो और सब अनिच्छनीय, खराब ही खराब, मनुष्यता बिगडी हुई है। इसे ठिक करने की कोशिश मे दुष्यंतजी वास्तविक चित्र प्रस्तुत करते हैं–

"हालाते जिस्म, सुरते मौं और भी खराब/चारो तरफ खराब यहाँ और भी खराब
नजारों में आ रहे हैं नजारे बहुत बुरे/होंठों में आ रही है जुबाँ और भी खराब।"[3]

1.4 स्वार्थ लोलुपता :

देश का प्रत्येक व्यक्तियों का राजनेताओं द्वारा सहन अपने स्वार्थ के खातिर उपयो किया गया है। इस संदर्भ में दुष्यंतजी कहते हैं–

"जिस तरह से चाहो बजाओ इस सभा में/हम नहीं है आदमी, हम झुनझुने हैं।"[4]

1.5 रोटी, कपडा और मकान :

भारत जैसे विशाल देश की बोंगडोर मूल्यहीन भ्रष्ट नेताओं के हाथों में चली जाने से, आम जनता को उनकी कुनीतियों का शिकार होना पडता है। अकाल, बेकारी के साथ यहाँ के बसनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को दो वक्त का खाना भी बडी मुश्किल से

नसीब होता है। हजारों लोग बेघर है, फूटपाथ पर जिन्दगी बिता देते है। रोटी, कपडा और मकान मानव की मूलभूत आवश्यकताएँ है, मगर देश में हजारो नग्न हालत मे जीवन यापन करते हैं। राजनेता सिर्फ बडे–बडे भावणों से जूठा आश्वासन मात्र देते हैं, इस ओर हमारा ध्यान दुष्यन्तजी ले जाते हैं–

"भूख है तो सब्रकर रोटी नहीं तो क्या हुआ,/आज कल दिल्ली में जेरे बहस है ये मुद्दाआ।।"[5]

1.6 गुनहगारी :

दुष्यंतकुमार ने अपनी ग़ज़लों में जिस तरह भारतीय परिवेश का यथार्थ चित्र उपस्थित किया है। वैसे ही यहाँ पर बसनेवाले लोगों पर हो रहे जूल्मों सितम का भी वर्णन करने में पिछे नहीं रहे हैं। सत्ताधारी पक्ष की गुनहगारी से लदी मानसिकता को दुष्यन्तजी की ग़ज़लों में अभिव्यक्ति मिली है। वह आदमी सत्ता की आड में इन्सानियत का खून करता टुकडे करता और आदमी को भूनकर खा जाने तक की मानसिकता गुनाहितता को दुर्ष्यंताजी ने अभिव्यक्त किया है–

"अब नयी तहजीब के पेशी नजर हम/आदमी को भूनकर खाने लगे हैं।"[6]

1.7 गरीबी–बेकारी फटेहाल जिन्दगी :

भारत पवित्र और पुण्यभूमि है। यहां समय–समय भगवान ने जन्म लिया है। दुष्यंतकुमार के दुःख है कि पूण्य और पवित्र भूमि में इन्सान की स्थिती दयनीय है, न भगवान इस दुरावस्था को मिटाता है, न उनके ठेकेदार नेताओं ने तो और भी हालत खोखली कर दी है– फटेहाल जिन्दगी यहाँ देशवासी जी रहे हैं। इस ओर हमार ध्यान ले जाते हुए कवि लिखते हैं–

'न हो कमीज तो पाँवो से पेट ढँक लेंगे।/ये लोग कितने मुनासिब है, इस सफर के लिए।।'[7]

1.8 नैतिक अधःपतन :

सभ्यता, संस्कृति और मानव जीवन मूल्यों पर आधारित होता है। कवि दुष्यंत कुमार ने वर्तमान में अपने आसपास के और भविष्य के ख्याल को सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया है। देश में एकता, विश्वास, प्रेम, संस्कार एक दुसरे के सुख:दुख की सहभागिता खो गई है। स्वार्थ सबकुछ है। परिस्थिति नया रुप रंग ले रही है, मूल्यों के ऱ्हास होने पर दुष्यंतकुमार व्यथित है। अपनी व्यथा को वह कुछ इस प्रकार अपनी ग़ज़ल में प्रकट करते हैं–

"लफ्ज एहसास–से छाने लगे, ये तो हद है,/लफ्ज माने भी छुपाने लगे, ये तो हद है।"[8]

निश्कर्शत :

दुष्यंतकुमार ऐसे कवियों में सह हैं, जिन्होंने हजारों और लाखों लोगों की तकलीफों को अपना समझकर उससे जीवन भर लडे और एक ऐसा समाज एवं, राष्ट्र निर्माण हो, उस कल्पना में एक निर्णायक भूमिका अदा की है। समाज में ऊँच–नीच के भेद, वर्गसंघर्ष, सामाजिक दुरुपता, भ्रष्टाचार, तानाशाही, गरीबी, फटेहाल जिन्दगी, राजनीतिक षडयंत्र आदि का पर्दाफाश करने में दुष्यंतकुमार की ग़ज़लें आम साधारण जनता में नैतिक मूल्य और अपनी कर्तव्य भावना दृढ बनाने तथा स्वार्थी नेताओं की देश के प्रति अपने फर्ज को याद कराने का कार्य करती है।

संदर्भ :

1. साये में धूप – दुष्यंतकुमार – पृ.13 – राधाकृष्ण प्रकाशन
2. साये में धूप – दुष्यंतकुमार – पृ.30 – राधाकृष्ण प्रकाशन
3. साये में धूप – दुष्यंतकुमार – पृ.48 – राधाकृष्ण प्रकाशन
4. साये में धूप – दुष्यंतकुमार – पृ.43 – राधाकृष्ण प्रकाशन
5. साये में धूप – दुष्यंतकुमार – पृ.21 – राधाकृष्ण प्रकाशन
6. साये में धूप – दुष्यंतकुमार – पृ.14 – राधाकृष्ण प्रकाशन
7. साये में धूप – दुष्यंतकुमार – पृ.161 – राधाकृष्ण प्रकाशन
8. साये में धूप – दुष्यंतकुमार – पृ.55 – राधाकृष्ण प्रकाशन
9. हिंदी ग़ज़ल साहित्य और दुष्यंतकुमार – डॉ.नागसेव ई श्रीमाली पृ.205, 207, 222 – सार्थ पब्लिकेशन

हिंदी विभाग प्रमुख
श्री मुलिकादेवी महाविद्यालय, निघोज
ता.पारनेर, जि.अहमदनगर
मो.नं. : 8605283683